संसाधन की अवधारणा क्या है? मानव उपलब्ध संसाधन का उपयोग कैसे करता है?

→ मानव की आवश्यकताओं की आंशिक या पूर्ण रूप से पूर्ति करने वाले स्रोत को संसाधन कहते हैं। ~~संसाधन के कई प्रकार के होते हैं. प्रमुख इसके प्राकृतिक संसाधन व मानवीय संसाधन सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं~~ ऐसे सभी पदार्थ व ऊर्जाएँ जो मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयोग किए जाते हैं, वे संसाधन कहलाते हैं। साधारनतः लोग किसी गोचर वस्तु यथा- जल, वन, मिट्टी आदि को ही संसाधन समझते हैं, लेकिन बहुत सी अगोचर वस्तुएँ यथा- मानव की क्षमता, ज्ञान, कौशल आदि भी संसाधन ही हैं।

वर्तमान समय में संसाधनों को अध्ययन बहुत जरूरी हो गया है। क्योंकि मानव अपनी उन्नति हेतु पूर्ण रूप से संसाधनों पर ~~आज~~ निर्भर है। संसाधन भूगोल में पृथ्वी के संसाधनों का अध्ययन किया जाता है। इसमें संसाधनों की विशेषताओं, उत्पादन, उपयोग व संरक्षण को अध्ययन किया जाता है।

Scanned with CamScanner

संसाधन को विभिन्न विद्वानों ने अलग-अलग आधारों पर बाँटा है, जैसे - प्राप्यता के आधार, मानवीय उपयोग के आधार पर, नवीकरणीयता के आधार पर। अध्ययन की सुविधा के लिए संसाधनों को मुख्य रूप से दो भागों में बाँटा गया है - प्राकृतिक संसाधन व मानवीय संसाधन।

(i) प्राकृतिक संसाधन :- वे संसाधन जो प्रकृति प्रदत्त होते हैं तथा मानव के लिए उपयोगी हेतु होते हैं, प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं। जैसे - मिट्टी, जल, हवा, वनस्पति इत्यादि

(ii) मानवीय संसाधन :- मानव स्वयं सर्वप्रमुख संसाधन है। मानव वस्तुओं का उत्पादक व उपभोक्ता दोनों है। यह संस्कृति का निर्माता है एवं वस्तुओं को संसाधन बनाने की क्षमता रखता है। प्रमुख मानवीय संसाधन है - शिक्षा, कला, ज्ञान इत्यादि

मानव द्वारा उपलब्ध संसाधनों का उपयोग निम्नलिखित तथ्यों को ध्यान में रख कर किया जाता है -

(i) मूल आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु :- मानव ने सर्वप्रथम बार संसाधनों का प्रयोग अपनी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु किया होगा यथा - भोजन, वस्त्र व आवास। जब प्रथम बार आदिमानव ने आग का प्रयोग माँस को पकाने हेतु किया होगा तब से आग मनुष्य के लिए संसाधन बन गई होगी।

(ii) जीवन स्तर में सुधार हेतु :- आधुनिक युग में प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन स्तर में सुधार चाहता है और इस हेतु वह संसाधनों का शोषण करता है। मनुष्य स्वभावतः प्रगतिवादी होती है और अपनी उन्नति हेतु वह संसाधनों का पूरा उपयोग करता है।

Scanned with CamScanner

(iii) ऊर्जा की प्राप्ती हेतु :- वर्तमान समय में मनुष्य की ऊर्जा संबंधी आवश्यकताएं प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही हैं। ऊर्जा की प्राप्ती हेतु मनुष्य नित्य नए व सुविधा जनक साधनों की खोज कर रहा है एवं पुराने संसाधनों का भी जरूरत से शोषण कर रहा है।

(iv) औद्योगिक उन्नति हेतु :- विश्व में औद्योगिकरण बढ़ने के साथ ही संसाधनों पर बोझ बढ़ता जा रहा है। जिसमें खनिज संसाधनों सर्वाधिक प्रमुख हैं अनेक खनिज भंडारों के निकट भविष्य में समाप्त हो जाने की आशंका है।

आज के युग में अब मनुष्य संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग पर ध्यान दे रहा है तथा समापनिय संसाधनों का संरक्षण भी प्रदान कर रहा है।

संसाधनों के कुछ मूलभूत गुण होते हैं। इस प्रकार प्रकृति, मानव तथा संस्कृति तीनों सम्मिलित योगदान से संसाधन का निर्माण होता है। संसाधन के चार आवश्यक गुण निम्न हैं—

(i) प्रकृति :- अधिकांस संसाधन प्रकृति प्रदत्त हैं। जैसे - भूमि जिस पर खेती की जाती है, घर बनाए जाते हैं, और भी विभिन्न मानवीय क्रिया कलाप जिस पर किए जाते हैं एक प्राकृतिक संसाधन है।

(ii) ऊर्जा :- मानवीय आवश्यकताओं की अंशत: या पूर्णत: पूर्ति हेतू ऊर्जा सर्वप्रमुख आवश्यकता है अत: संसाधन का एक महत्वपूर्ण गुण बन जाता है।

(iii) मानव :- कोई भी पदार्थ या ऊर्जा तभी संसाधन कहलाता है जब वह मनुष्य के किसी प्रकार की आवश्यकता को पूरा करता है अत: मानव के भी संसाधन की कल्पना व्यर्थ है।

Scanned with CamScanner